एक सर्वेक्षण के अनुसार महानगर में मलिन बस्तियों के गरीब लोग अपनी कुल आय का 25 से 30 प्रतिशत चिकित्सा पर व्यय करते हैं।

स्वास्थ्य कैम्प

शहर के प्रतिष्ठित डाक्टरों के सहयोग से समय-समय पर स्वास्थ्य कैम्प का आयोजन किया गया जिसमें वार्ड के लोगों ने अपनी बीमारी के बारे में आवश्यक परामर्श प्राप्त किया। इन कैम्पों में आने वाले मरीजों में बुखार, खांसी, कीट जनित रोग, पीलिया, अपच की बीमारियां तथा अन्य प्रदूषित जल जनित बीमारियों से सम्बन्धित रोगियों ने परामर्श प्राप्त किया। गोरखपुर मस्तिस्क ज्वर, पीलिया और हैजा के लिए कुख्यात क्षेत्र है। इन रोगों के बारे में समय-समय पर पूरे क्षेत्र में रैली, प्रभात फेरी निकालकर तथा इन रोगों के सम्बन्ध में जानकारी देने के लिए पम्पलेट, फोल्डर आदि का वितरण किया गया।

कठपुतली तथा सचल प्रदर्शनी

साफ सफाई, स्वास्थ्य व स्वच्छता के लिए पूरे वार्ड में कई स्थानों पर कठपुतली नाटक तथा सचल प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया जिनमें साफ सुथरा रहने की महत्ता, विधि और उसके परिणामों के प्रदर्शन से सामान्य जन को प्रशिक्षित किया गया।

स्वच्छ पेयजल कार्यक्रम

वार्ड में स्वच्छ पेयजल के उपयोग के लिए प्रत्येक परिवारों को प्रदूषित जल को स्वच्छ बनाने के लिए क्लोरीन गोली का उपयोग बताकर उसका वितरण किया गया तथा पानी को छान एवं खौलाकर शुद्ध करने की विधि के सम्बन्ध में जानकारी दिया गया। वर्षों से निर्मित पानी टंकी से पानी के आपूर्ति न होने के कारण समुदाय को जलकल अधिकारियों से मिलवाकर उसे चालू कराने के साथ-साथ क्षेत्र में 6676 मीटर जल की पाइप का विस्तार कराया गया तथा परिवारों को इस पाइप से कनेक्शन लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

इन प्रयासों के प्रभावों तथा परिवर्तनों के सम्बन्ध में सतत निगरानी के लिए समय-समय पर क्षेत्र का पुनसर्वेक्षण किया जाता रहा है तथा मानसून के पूर्व व पश्चात की अवधि में विभिन्न स्रोतों के जल का परीक्षण कर उसकी शुद्धता के प्रतिवेदन से परिवारों एवं क्षेत्र को सूचित किया जाता रहा है।

प्रभाव

1. क्षेत्र में मस्तिस्क ज्वर, मलेरिया, कालरा का कोई भी केस वर्ष 2012 में दर्ज नहीं हुआ।
2. कोई भी महामारी का फैलाव नहीं हुआ।
3. जल जनित बीमारियों जैसे पीलिया, डेंगू, आंत्रशोध आदि से कोई व्यक्ति प्रभावित नहीं हुआ।
4. समुदाय ने ठोस अपशिष्टों के प्रबन्धन, जल निकासी, नालियों, सड़कों के निर्माण एवं साफ सफाई करने तथा नगर निगम द्वारा कराने में सकारात्मक सहयोग दिया।
5. सफाई-स्वच्छता हेतु लोगों के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला जिससे बीमारियों में कमी आई।
6. वार्ड के 712 परिवार अब पाइप लाइन से पानी प्राप्त करते है पाइप में पानी के आने का समय पहले 9 घण्टा था उसे बढ़ाकर 12 घण्टा करवाया गया।
7. 337 लोगों ने नये शौचालय का निर्माण करवाया।
8. क्षेत्र में बन्द पड़े इण्डिया मार्का हैण्ड पम्प को ठीक कराने के साथ-साथ 5 इण्डिया मार्का के आधार को उँचा कराया गया।

■

गोरखपुर एनवायरन्मेन्टल एक्शन ग्रुप
पोस्ट बाक्स नं० 60, गोरखपुर-273001
दूरभाष : 91 551 2230004 फैक्स : 91 551 2230005
ई-मेल : geag@geagindia.org, geagindia@gmail.com
वेबसाइट : http://www.geagindia.org

एशियन सिटीज़ क्लाइमेट चेंज रिजीलियन्स नेटवर्क
(एसीसीसीआरएन)

सामुदायिक स्वास्थ्य : एक पहल

महेवा वार्ड

गोरखपुर महानगर पूर्वी उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र में बसा हुआ है। अपनी सुखद जलवायु के कारण अंग्रजों के समय में इसे 'हिल स्टेशन' कहा जाता था। समय बीतने के साथ यहाँ भी बदलते मौसम ने अपना प्रकोप फैलाया। 2007 -2008 के बीच में यहाँ न्यूनतम तापमान में कुल 22.84 प्रतिशत की गिरावट आई है। इस तरह महानगर में जाड़ा व गर्मी दोनों में बढ़ोत्तरी होने लगी है। कम समय में अधिक वर्षा व बारिश में अनियमितता के परिणामस्वरूप आज महानगर में जल जमाव क्षेत्र बढ़ते जा रहे हैं। जाड़े में कम वर्षा भूगर्भ जल के स्तर को प्रभावित कर रही है जिससे मानसून के पूर्व पानी की समस्याएं बढ़ रही हैं। गर्मी में ज्यादा आर्द्रता अनेक बीमारियों को पनपने का मौका दे रही है। इन्हीं कारणों से महानगर में जल जनित व जीवाणु जनित बीमारियों में क्रमश: इजाफा होता चला जा रहा है।

शहर की नाजुकता को बढ़ाने में तीन कारक प्रमुख भूमिका अदा कर रहे हैं - जल जमाव, ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन और सीवेज व्यवस्था। इनका समुचित निराकरण न हो पाने के कारण यहां रोग और बीमारियों की संख्या बढ़ती जा रही है।

रोग व बीमारियों के प्रमुख कारक

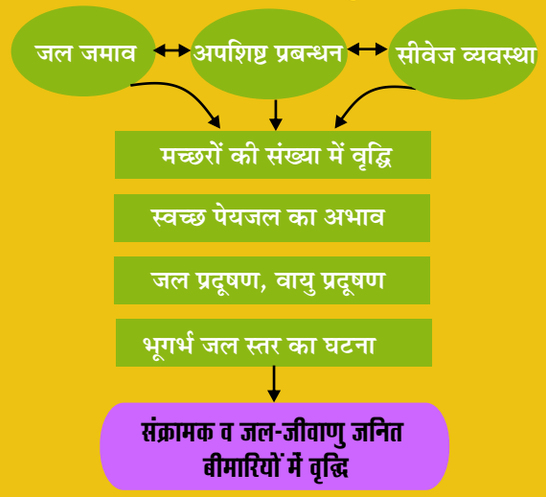

महेवा वार्ड जिसमें महानगर के छ: मुहल्ले सम्मिलित हैं, का कुल क्षेत्रफल 2.8 वर्ग किमी है। इस क्षेत्र में निम्न आय वर्ग की अधिकता होने के साथ-साथ नागरिक सुविधाओं का अभाव है तथा उपलब्ध सुविधाएं भी बहुत निम्न कोटि की हैं। वार्ड का पूर्वी भाग निम्न भूमि होने के कारण जल जमाव तथा पश्चिमी भाग नदी के सन्निकट होने के कारण बाढ़ प्रभावित क्षेत्र है जिस पर निर्मित तटबन्ध जल को नदी में प्रवाहित होने के लिए

महेवा वार्ड की अवस्थिति

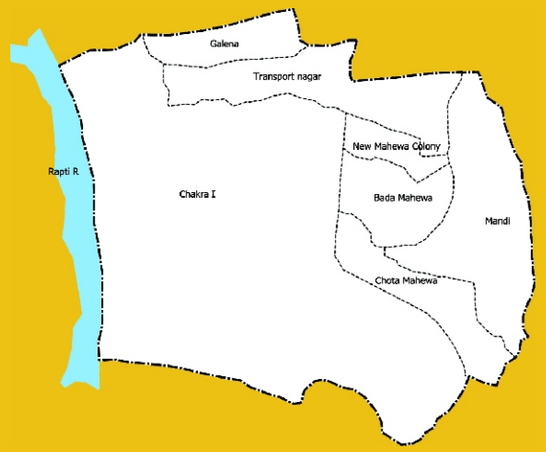

अवरोध बनता है। अधिकांश जनसंख्या पीने के लिए छिछले हैण्डपम्प से निकले पानी का प्रयोग करते हैं। क्षेत्र में ठोस अपशिष्टों के फेंके जाने के कारण वर्षा का जल रिसकर भूमिगत जल में मिलने से यह पानी प्रदूषित हो चुका है। गंदगी तथा जल जमाव के कारण यह क्षेत्र कीट पतंगों, मक्खियों तथा मच्छरों के प्रजनन का उपयुक्त स्थल भी है। नागरिकों में स्वच्छता एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के अभाव तथा अस्वास्थ्यकर भौतिक, जैविक एवं मानवीय दशाओं के कारण इस क्षेत्र में जल जनित, कीट जनित तथा संक्रामक रोगों का प्रकोप एक सामान्य बात है जिससे यहाँ का समुदाय प्रभावित रहता है तथा महामारियों के प्रकोप का कोप भाजन भी बनते हैं।

सर्वेक्षण

महेवा वार्ड में फरवरी-मार्च, 2011 को एक मूलभूत सर्वेक्षण प्रत्येक परिवार का किया गया जिसमें विभिन्न बीमारियों से पीड़ित लोगों की गणना की गयी और पाया गया कि खांसी और ज्वर से सर्वाधिक 37.2 प्रतिशत अन्य 10.8 प्रतिशत, कोई बीमारी नहीं 27 प्रतिशत, डायरिया एवं निमोनिया से क्रमश: 12.3 एवं 12.7 प्रतिशत लोग प्रभावित थे। इसके अलावा चर्मरोग, पीलिया, उल्टी, मलेरिया, कालरा आदि रोग भी इस क्षेत्र में पर्याप्त पाये गये।

वार्ड महेवा में स्वच्छता साफ-सफाई एवं स्वास्थ्य तथा चिकित्सा के प्रति लोगों को जागरूक करने तथा संवेदनशील बनाने के लिए ए.सी.सी.आर.एन. परियोजना के तहत अनेक अभियान चलाए गये। विशेषतौर पर स्वच्छता, दस्त, मलेरिया व अन्य संक्रामक रोग, मच्छरों पर नियंत्रण के तौर तरीके, स्वच्छ पेय जल का उपयोग, चेचक, मस्तिष्क ज्वर, पीलिया तथा बच्चों व गर्भवती महिलाओं के टीकाकरण पर अभियान आयोजित किए गये थे।

2011 में बीमारियों का प्रतिशत

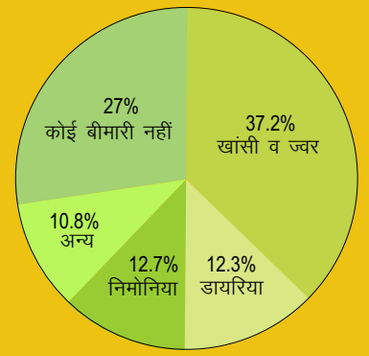

सामुदायिक स्वास्थ्य जागरूकता अभियान

टीकाकरण

विभिन्न बीमारियों के टीकाकरण का एक सघन अभियान चलाकर 5 साल तक के बच्चों को मस्तिस्क ज्वर, चेचक व अन्य टीके तथा गर्भवती महिलाओं को टिटनेस आदि के टीके स्वास्थ्य कर्मियों के सहयोग से लगवाया गया। साथ ही उन परिवारों को इस विषय में जागरूक भी किया गया।